IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, June 2019
Impact Factor: 4.819

सती प्रथा उन्मूलन एवं 19वीं सदी का सामाजिक सुधार

डॉ रजत गंगवार

असिस्टेंट प्रोफेसर इतिहास,

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर, पीलीभीत, उ०प्र०

rajatgangwar4289@gmail.com

शोध सार -

19वीं शताब्दी में भारत में हुए सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन औपनिवेशिक काल में राष्ट्रीय जागरण के प्रारम्भिक बिन्दु थे। इसे भारतीय नवजागरण का काल भी कहा जाता है। इन आंदोलनों ने भारत में राष्ट्रवाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 'बिपिन चन्द्रा' ने इन आंदोलनों के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन भारतीय पुनर्जागरण का ही एक हिस्सा था, जो भारत में एक सामान्य सुधार आंदोलन के रूप में प्रकट हुआ। राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती, एनी बेसेंट तथा ज्योतिबा फूले आदि ये सभी समाज सुधारक सही अर्थों में देशभक्त थे। इन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ जंग छेड़ी और भारतीयों को अपने प्राचीन गौरवशाली अतीत से परिचित कराकर भारतीयों को उस पर गर्व करने की प्रेरणा दी।

19वीं शताब्दी को भारतीय समाज के लिए एक क्रांतिकारी समय कहा जा सकता है। यह भारतीय राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक सभी क्षेत्रों में बुनियादी बदलाव का साक्षी था। सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में वर्षों पुरानी मान्यताओं और परम्पराओं को चुनौती दी गई। सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, जाति प्रथा तथा कन्या शिशु हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए आंदोलन चलाए गए तथा स्त्री शिक्षा और विधवा पुर्नविवाह को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जागरूकता अभियान चलाए गए। इन आंदोलनों में भारत के शिक्षित, अंग्रेजी पढ़े लिखे वर्ग ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। वास्तव में भारतीय समाज में अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने परिवर्तनकारी भूमिका निभाई। आधुनिक शिक्षा प्राप्त बुद्धजीवीयों में यह चेतना

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

फैली कि भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना में मौजूद कुरीतियों को दूर किए बिना भारतीय तथाकथित अंग्रेजी श्रेष्ठता और अहंकार के प्रभाव से खुद को मुक्त नहीं कर सकते।

कुंजी शब्द:-
सामाजिक स्थिति, धर्म सुधार आंदोलन,सती प्रथा,आडंबर,सामाजिक कुरीतियां, अतीत, स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, अंधविश्वास, पाखंड, प्रगतिशील, मूर्ति पूजा, धार्मिक सहिष्णुता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किकता

प्रस्तावना:-

19वीं शताब्दी में भारत में हुए सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन औपनिवेशिक काल में राष्ट्रीय जागरण के प्रारम्भिक बिन्दू थे। इसे भारतीय नवजागरण का काल भी कहा जाता है। इन आंदोलनों ने भारत में राष्ट्रवाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बिपिन चन्द्रा ने इन आंदोलनों के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन भारतीय पुनर्जागरण का हि एक हिस्सा था जो भारत में एक सामान्य सुधार आंदोलन के रूप में प्रकट हुआ और भारत की राजनीतक मुक्ति का आंदोलन का रूप लेने से पहले इसने व्यापक सामाजिक और धार्मिक सुधारों का सूत्रपात किया। राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती, एनी बेसेंट तथा ज्योतिबा फूले आदी ये सभी समाज सुधारक सही अथर्थों में देशभक्त थे। इन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ जंग छेड़ी और भारतीयों को अपनी प्राचीन गौरवशाली अतीत से परिचित कराकर भारतीयों को उस पर गर्व करने की प्रेरणा दी। 19वीं शताब्दी को भारतीय समाज के लिए एक क्रांतिकारी समय कहा जा सकता है। यह भारतीय राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक सभी क्षेत्रों में बुनियादी बदलाव का साक्षी था। सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में वर्षों पुरानी मान्यताओं और परम्पराओं को चुनौती दी गई। सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, जाति प्रथा तथा कन्या शिशु हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए आंदोलन चलाए गए तथा स्त्री शिक्षा और विधवा पुर्नविवाह को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जागरूकता अभियान चलाए गए। इन आंदोलनों में भारत के शिक्षित, अंग्रेजी पढ़े लिखे वर्ग ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। वास्तव में भारतीय समाज में अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार प्रसार ने परिवर्तनकारी भूमिका निभाई। आधुनिक शिक्षा प्राप्त बुद्धजीवियों में यह चेतना

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

फैली कि भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना में मौजूद कुरीतियों को दूर किए बिना भारतीय तथाकथित अंग्रेजी श्रेष्ठता और अहंकार के प्रभाव से खुद को मुक्त नहीं कर सकते।

राजा राम मोहन राय-

राजा राममोहन राय भारतीय पुर्नजागरण के यमदूत थे। उन्होंने पाश्चात्य ज्ञान के आधार पर हिन्दू धर्म तथा समाज में परिवर्तन लाने का कार्य प्रारम्भ किया और भारत में आधुनिक युग का सूत्रपात किया। राजा राममोहन राय भारतीय नव जागरण के अग्रदूत और जनक थे। इस घारा को प्रवाहित करने का श्रेय उन्हीं को प्राप्त है। राजा राम मोहन राय आधुनिक भारत के पुर्नजागरण के पिता और एक अथक समाज सुधारक थे, जिन्होंने भारत में प्रबोधन और उदार सुधारवादी, आधुनिकीकरण के युग का उद्घाटन किया। राजा राम मोहनराय केवल धर्म सुधारक ही नहीं थे बल्कि सामाजिक-सुधारक भी थे। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि थी-1929 ई. में सती प्रथा को दूर करवाना। राजा राममोहनराय ने अनुभव किया कि हिन्दु महिलाओं की समाज में बहुत ही निम्न स्थिति थी। अतः वे महिलाओं के अधिकारों के प्रबल समर्थक के रूप में कार्य करने लगे। वे कई वर्षों तक सती प्रथा को बन्द करने के लिए कठिन परिश्रम करते रहे। 1818 ई. में प्रारम्भ में वह 'सती' विषय पर जनता में जागृति लाने के लिए निकल पड़े। एक ओर वे प्राचीन पवित्र ग्रन्थों से उद्धरणों द्वारा ये सिद्ध करने पर जुटे हुए थे कि हिन्दु धर्म सती प्रथा के विरूद्ध है और दूसरी ओर वे लोगों से दया, तर्क और मानवता के आधार पर आग्रह करते थे।

शोध अध्ययन के उद्देश्य-

1- 19वी सदी के सामाजिक-राजनीतिक दर्शन, उसके महत्व को जानना।

2- भारतीय समाज पर राजा राममोहन राय के विचारों और सक्रियता का पता लगाना।

3- राजा राममोहन राय के सामाजिक-राजनीतिक योगदान का अध्ययन करना।

4- राजा राममोहन राय के द्वारा सती प्रथा के क्षेत्र में सुधार का अध्ययन करना।

राजा राम मोहन राय एक महान सुधारक थे। उन्होंने धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में निम्नलिखित सुधार कियेः

धार्मिक सुधारः राजा राममोहन राय का धार्मिक दृष्टिकोण बड़ा व्यापक था। यद्यपि हिन्दू धर्म में उनकी पूर्ण आस्था थी, परन्तु वे रूढ़ियों, अन्धविश्वासों और पाखण्डों से घृणा करते थे। वे हिन्दू

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

धर्म की कुरीतियों को दूर करके उसे प्रगतिशील बनाना चाहते थे, अतः उन्होंने मूर्तिपूजा ,बहुदेववाद आदि का विरोध किया और एकेश्वरवाद का प्रचार किया। उनके मतानुसार ईश्वर निराकार है, शाश्वत है, अज्ञेय है तथा नित्य है, वही इस विश्व का सृष्टा तथा रक्षक है। वे धार्मिक सहिष्णुता के प्रबल समर्थक थे ओर धार्मिक कट्टरता से कोसों दूर थे । यद्यपि वे ईसाई धर्म से प्रभावित थे परन्तु उन्होंने ईसाई धर्म की केवल व्यावहारिक शिक्षाओं को ही अपनाने की प्रेरणा दी थी।

ब्रहा समाज की स्थापनाः राजा राममोहन राय ने मध्यकालीन कुरीतियों को दूर करने के लिए एवं अपने धार्मिक विचारों का प्रसार करने के लिए 20 अगस्त, 1508 ई० को कलकता में ब्रहम समाज की स्थापना की। समाज ने एकेश्वरवाद, धार्मिक सहिष्णुता और उदारता पर बल दिया। ब्रहम समाज के माध्यम से राममोहन राय ने मध्यकालीन धार्मिक अन्धविश्वासों का निवारण कर उपनिषदों और वेदान्तों के एकेश्वरवाद का प्रचार किया एवं बुद्धिवादी और मानवतावादी धार्मिक दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया।

सामाजिक सुधारः राजा राममोहन राय मूलतः एक समाज सुधारक थे। उन्होंने सामाजिक सुधारों में सक्रिय भाग इसलिए लिया क्योंकि उन्होंने यह अनुभव किया कि हिन्दुओं के राजनीतिक पतन का मुख्य कारण उनका धार्मिक तथा सामाजिक पतन है। राजा राममोहन राय तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों और अन्धविश्वासों को नष्ट करके ब्लॉकप्रगतिशील समाज की स्थापना करना चाहते थे। वे रूढ़ियाँ तथा परम्पराओं के विरोधी थे। राजा राममोहन राय नारी उत्थान के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने नारियों के साथ किये जाने वाले अन्याय तथा अत्याचार को कटु आलोचना की तथा समाज में सम्मानित स्थान दिये जाने पर बल दिया। उन्होंने बाल-विवाह, बहु विवाह, सती प्रथा आदि कुरीतियों का विरोध किया और स्त्री शिक्षा तथा विधवा विवाह का समर्थन किया। उन्होंने स्त्रियों को सम्पत्ति में से उचित भाग दिये जाने पर बल दिया। उन्होंने सती प्रथा के विरुद्ध भी आवाज उठाई। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के क्रूर तथा अमानवीय प्रथा के उन्मूलन पर बल दिया। 4 दिसम्बर, 1829 ई. को ज विलियम बैटिक ने सती प्रथा को गैर-कानूनी अ कर केकेदिqjया। राममोहन राय जाति प्रथा के घोर kkkkkkkkkkविरोधी उन्होंझांकaजजाने जातीय भेदभाव तथा ऊंच-नीच का विरोध किया। उनका दृढ़ विश्वास था कि व्यक्ति को जाति के आधार पर श्रेष्ठ या तुच्छ नहीं माना जाना चाहिए।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

सती प्रथा का उन्मूलन : राजा राम मोहन राय-राममोहन राय सती किए जाने की क्रूरता से बाल्यावस्था से ही परिचित थे, जब उनके बड़े भाई की विधवा को उनकी आँखों के सामने बलपूर्वक सती किया गया था, अंग्रेज शासक इस प्रथा को बहुत बुरा मानते थे, पर उनको यह डर लगता था कि इसमें हस्तक्षेप करने से शायद इस देश में अशांति फैल जायेगी और हमारे नव स्थापित राज्य के लिए एक बड़ा खतरा पैदा हो जायेगा। इसलिए उन्होंने पंडितों से सम्मति लेकर आरंभ में यह आज्ञा प्रचारित की कि 'सती होने वाली स्त्री से यह मालूम कर लिया जाये कि वह अपनी राजी-खुशी से और होश-हवास में सती होती है या किसी प्रकार की जबर्दस्ती के कारण?" क्योंकि पंडितों के मतानुसार शास्त्रों में किसी स्त्री को बलपूर्वक सती करने का विधान न था और उसे निंदनीय बतलाया गया था। इसीलिए जब राममोहन राय ने सती प्रथा के विरुद्ध आंदोलन आरंभ किया तो एक तरफ तो सरकार एक प्रभावशाली विद्वान को अपना सहायक और समर्थक पाकर प्रसन्न हुई, पर दूसरी ओर हिंदू- जाति का अंधविश्वासी समुदाय उन पर टूट पड़ा, उनको धर्मद्रोही और जातिद्रोही कहा जाने लगा। बड़ी- बड़ी सभायें करके प्रस्ताव पास किये जाने लगे कि राममोहन राय के कहने से सरकार सती प्रथा को बंद न करे। उन्होंने अंग्रेजी लेखों द्वारा अंग्रेज- समाज पर इतना प्रभाव डाला कि अंत में वे उन्हीं के पक्ष में हो गये।

सती प्रथा को अनुचित सिद्ध करने के लिए राममोहन राय ने मुख्यतः तीन दलीलें पेश कीं-

1-शास्त्रों में सती होना आवश्यक नहीं माना गया है। कहीं भी यह नहीं लिखा है कि यदि कोई सती न हो तो उसे पाप लगेगा।

2- काम्य- कर्म को शास्त्रों में हीन कहा गया है और सती होना एक काम्य- कर्म ही है। फिर शास्त्रों में ही सती होने की अपेक्षा विधवा का ब्रह्मचर्य-व्रत पालन करना अधिक श्रेष्ठ बतलाया है।

3-शास्त्रों में सती के सब काम उसकी ईच्छानुसार होने चाहिए। वह अपने आप संकल्प करे, अपने आप चिता पर बैठे और शांति से जलकर मर जाये, पर ऐसा कहीं नहीं होता। सती के नाम पर सर्वत्र नारी- हत्या की जाती है, इसलिए यह प्रथा बंद की जानी चाहिए।

राममोहन राय ने सती प्रथा पर बंगाली और अंग्रेजी में तीन पुस्तकें लिखकर मुफ्त बँटवाई। अंग्रेजी पुस्तकों को उन्होंने उस समय के वायसराय लार्ड हेस्टिंग्स की पत्नी श्रीमती मार्किवस ऑव हेस्टिंग्स को समर्पित किया था। इसका अंग्रेजी अधिकारियों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। सन् 1819 के 'इंडिया गजट' में लिखा गया था- "इस देश के एक अति प्रधान विश्व- हितैषी ने सतीदाह की कठोर प्रथा का आंदोलन उठाकर शासकों की विशेष सहायता की है। बड़े उत्साह से

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

उसने अपनी सम्मति वायसराय के सामने रखी है। थोड़े दिन पहले वायसराय उनसे मिले थे और बड़े आदर के साथ उनकी बातें सुनी थी। हमें मालूम हुआ कि गवर्नर-जनरल इस प्रथा को बंद कर देंगे, क्योंकि ब्रिटिश शासन के लिए इससे बढ़कर और कोई कलंक नहीं हो सकता।" फिर भी इस समस्या पर सब पहलुओं से विचार करने और विरोधियों की बातों का निराकरण करने में कुछ वर्ष लग ही गये। बीच में लार्ड आमहर्स्ट गवर्नर जनरल बनकर आ गये, जो इस खतरे को उठाना नहीं चाहते थे और इसलिए मौन ही बने रहे, सन् 1828 ई० में लार्ड विलियम बैंटिक आये जो बड़े सुधारप्रिय थे। उन्होंने राजा राममोहन राय को बुलाकर उनसे सलाह की और सन् 1829 की 4 दिसंबर को कानून बनाकर सदा के लिए सती- प्रथा को बंद कर दिया। दो तीन दिन के भीतर ही इस कानून का हुक्म मजिस्ट्रेटों के पास भेज दिया गया और अनगिनत विधवाओं की तकदीर फिर गई।

निष्कर्ष:-

19वीं सदी का धर्म सुधार आंदोलन भारतीय इतिहास में सामाजिक और बौद्धिक जागरण के एक महत्वपूर्ण चरण का प्रतिनिधित्व करता है। यह वह समय था जब भारतीय समाज अनेक कुरीतियों, अंधविश्वासों और रूढ़िवादी परंपराओं से जकड़ा हुआ था। सती प्रथा, बाल विवाह, जाति-भेद, छुआछूत और महिलाओं की दयनीय स्थिति जैसी समस्याओं ने समाज को कमजोर बना दिया था। ऐसे समय में सुधारकों ने न केवल इन बुराइयों को पहचाना, बल्कि उनके खिलाफ संघर्ष भी किया। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद और सर सैयद अहमद खान जैसे महान व्यक्तित्वों ने समाज को एक नई दिशा प्रदान की।इन आंदोलनों की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इन्होंने धर्म को तर्क और मानवता के दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया। इन्होंने यह स्पष्ट किया कि धर्म का वास्तविक उद्देश्य मानव कल्याण है, न कि रूढ़ियों और अंधविश्वासों का पालन करना। इस प्रकार, इन सुधार आंदोलनों ने भारतीय समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किकता को बढ़ावा दिया। साथ ही, इन्होंने शिक्षा के महत्व को भी रेखांकित किया, जिससे समाज में जागरूकता और आत्मविश्वास का विकास हुआ। महिलाओं की स्थिति में सुधार लाना भी इन आंदोलनों का एक प्रमुख उद्देश्य था। सती प्रथा का उन्मूलन, विधवा विवाह को प्रोत्साहन और महिला शिक्षा के प्रसार जैसे कदमों ने महिलाओं को समाज में एक नई पहचान दिलाई। इसके परिणामस्वरूप महिलाएं भी समाज के विकास में सक्रिय भागीदारी करने लगीं। इसी प्रकार, जाति

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

प्रथा और छुआछूत के खिलाफ उठाई गई आवाजों ने सामाजिक समानता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इसके अतिरिक्त, 19वीं सदी के धर्म सुधार आंदोलनों ने भारतीय राष्ट्रीयता के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन आंदोलनों ने लोगों में आत्मसम्मान और एकता की भावना को जागृत किया, जिससे वे अपने अधिकारों के प्रति सजग हुए। यह जागरूकता आगे चलकर स्वतंत्रता आंदोलन की आधारशिला बनी। इस प्रकार, ये आंदोलन केवल धार्मिक या सामाजिक सुधार तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने राजनीतिक चेतना को भी जन्म दिया। अंततः, यह कहा जा सकता है कि 19वीं सदी के धर्म सुधार आंदोलन भारतीय समाज के पुनर्निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक और प्रभावशाली सिद्ध हुए। इन्होंने समाज को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का कार्य किया और एक ऐसे आधुनिक भारत की नींव रखी, जो समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के सिद्धांतों पर आधारित है। आज भी इन आंदोलनों की प्रासंगिकता बनी हुई है, क्योंकि ये हमें यह सिखाते हैं कि समाज में सुधार के लिए जागरूकता, शिक्षा और साहस की आवश्यकता होती है।

संदर्भ-

1.सूद, ज्योति प्रसाद, आधुनिक भारतीय सामाजिक तथा राजनीतिक विचार की मुख्य धाराऐ, जय प्रकाश नाथ एण्ड कम्पनी, मेरठ, 1970

2. सिंह, आर० पी०., एजूकेशन एंड दी इण्डियन नेशनल कांग्रेस (1885-1947), सीनेरियों पब्लिकेशन, दिल्ली, 1965

3. मेहता, गिरिश, मॉर्डन इंडियन पॉलिटिकल थिंकर्स, मुरारीलाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 2006

4. त्यागी, रूचि, एवं डागर, के०. भारतीय राजनीतिक चिंतन, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, 1996

5. वर्मा, वी०पी०, आधुनिक भारतीय राजनीतिक एवं सामाजिक चिंतन, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा

6. नागर, पुरुषोत्तम, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, राजस्थान ग्रंथ अकादमी, जयपुर

7. जैन, धरमचंद, दरोगा, कैलाश, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर

8. सरस्वती, सी०एम०, भारतीय राजनीतिक चिंतन, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, June 2019
Impact Factor: 4.819

9. ओमप्रकाश, राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा

10. गाबा, ओम प्रकाश, भारतीय राजनीतिक विचारक, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा

11. बिरयानी, पुष्पा, व सक्सेना, राजेश्वरी, भारतीय राजनीतिक विचारक, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।